शेर-शायरी की चलतीफिरती युनिवर्सिटी - श्री नटवरभाई भट्ट

नटवरभाई भट्ट के साथ मेरा काफी गहरा संबंध रहा; करीब करीब तीन दसकों का । वे स्वभाव से सरल, अत्यंत मिलनसार, बेहद प्रेमी, हॅसमुखी और शेर-शायरी के चाहक और ज्ञाता थे. इसी कारण मैं उनके प्रति आकर्षित हुआ और हमारा परिचय मित्रता में परिवर्तित होने लगा और समय बीतते हुए हमारी मित्रता गहरी हो गई ।

जब भी मैंने किसी व्यक्ति का परिचय उनसे करवाया तो वे तुरन्त ही उस व्यक्ति के नाम, व्यवसाय या होद्दे के अनुरूप कोई ना कोई शेर सुनाकर उसका अभिवादन करते थे । उन्हें हजारो शेर-शायरी याद थे और साथ साथ उनके लेखकों के नाम भी । इसी कारण हर एक मंच से मैं उनका परिचय 'शेर-शायरी की चलतीफिरती युनिवर्सिटी' के रूप में करवाता था । वे पत्रकार, लेखक, संपादक एवं शिक्षणशास्त्री भी थे । और सबसे ज्यादा तो वे साहित्य प्रेमी थे । बड़ौदा शहर के कई सारे साहित्यिक कार्यक्रमों में उनकी उपस्थिति नियमित रूप से बनी रहती थी । उनकी उपस्थिति मानो कि हर एक ऐसे कार्यक्रम की गरिमा बढ़ा देती थी । ऐसे कार्यक्रमों के आयोजक भी उनका बहुत सम्मान करते थे । वे ग्रंथ गोष्ठी, वात्सल्य यज्ञ, सुरभि कला केन्द्र, टी. आर. पटेल एज्युकेशन ट्रस्ट जैसी कई संस्थाओं में सक्रिय रूप से कार्य करते थे । साहित्य के प्रेमी होने के नाते डॉ. रणजीतभाई पटेल (अनामी साहब), नाट्यगुरु मार्कन्ड भट्ट, डॉ. सुभाषभाई दवे जैसे साहित्यकरों से वे हर सप्ताह कम से कम एक बार तो मिलते ही थे और साहित्यिक विषयों पर विचारविमर्श किया करते थे ।

अपने बम्बई के निवास के दौरान उन्होंने जन्मभूमि, मुंबई समाचार जैसे अखबारों के लिए पत्रकार के रूप में काम किया । साथ ही उन्होंने कई सामयिकों के लिए कहानियाँ एवं शेरशायरी के विषय में लेख भी लिखे । किन्तु इस काम से जो आमदानी होती थी वह नियमित रूप से नहीं मिलती थी और परिवार के रोजमर्रा के खर्च के लिए भी पर्यापत नहीं थी । स्थायी रूप से आय मिलती रहे इसलिए उन्होंने बम्बई की फेलोशीप हायस्कूल में हिन्दी विषय पढ़ाने का काम स्वीकार कर लिया । कई वर्षों तक उन्होंने इस शाला के विद्यार्थियों में शिक्षण एवं संस्कार का सिंचन किया । शाला के संचालक गण से मतभेद होने के कारण उन्होंने अपने स्वमान की रक्षा के लिए इस नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और बड़ौदा में आ बसे ।

उसी समय मेरा उनसे परिचय हुआ । बड़ौदा शहर में कई सारे सामाजिक और साहित्यिक कार्यक्रमों में मुझे उनके साहित्यिक ज्ञान के बारे में जानने को मिला और मैं उनसे बहुत ही प्रभावित हुआ । ऐसे कई कार्यक्रमों में से जो तीन-चार कार्यक्रमों का संचालन उन्होंने किया उनको यहाँ उल्लेखित करना उचित रहेगा ।

१ बड़ौदा म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन की ओर से पूरे देश के प्रख्यात कविओं का एक कवि सम्मेलन आयोजित करने का तय हुआ था । इसमें समस्या यह थी कि ऐसे कविओं के नाम और पता किससे मिल सके ये किसीको मालूम नहीं था । मैंने इस विषय में श्री नटवरभाई भट्ट का संपर्क किया । उन्होंने मुझे बालकवि बैरागी, बशीर बद्र, सरोजकुमार आदि के नाम और पता उपलब्ध कराया । इन सब कविओं को हमने आमंत्रित किया और सभी लोग आये । कवि सम्मेलन का कार्यक्रम बहुत ही प्रशंसनीय रहा और उसमें भी श्री नटवरभाई भट्ट का संचालन तो मानो सोने पे सुहागा साबित हुआ ।

२ इसी तरह जब बड़ौदा म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन ने कवि प्रदीपजी का मरणोत्तर सम्मान करने का कार्यक्रम आयोजित किया तो उसका संचालन भी श्री नटवरभाई भट्ट ने ही किया । इस कार्यक्रम का संचालन भी बड़ा सराहनीय रहा और तत्कालीन मेयरश्री तो इससे बहुत ही प्रभावित हुए थे । उन्होंने श्री नटवरभाई भट्ट को सम्मानित भी किया ।

३ दुर्भाग्यवश उनके पुत्र डॉ. अशोक, जो कि अमरिका में स्थित थे, को किडनी की बीमारी हो गई जिसके कारण किडनी ट्रान्सप्लान्ट करने की जरूरत हुई । श्री नटवरभाई भट्ट खुद की किडनी का दान करने के लिए अमरिका जाने के लिए तैयार हो गये । उस समय उनकी वय करीब ७० साल की थी । दिवंगत श्रीमंत महाराजा रणजीतसिंहजी गायकवाड़ के अध्यक्षपद में उनके अमरिका जाने के समय आयोजित बिदाई समारोह संपन्न हुआ ।

४ बैंक अधिकारी श्री सुरेश शाह नि:संतान दंपतिओ को दत्तक विधान से संतान दिलवाने के लिए 'वात्सल्य यज्ञ' संस्था का संचालन करते थे । उनकी इस संस्था के वार्षिक दिन मनाने के कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री नटवरभाई भट्ट रहे थे और उन्होंने मननीय वक्तव्य प्रस्तुत करके इस कार्यक्रम की गरिमा बढ़ा दी थी ।

ऐसी पश्चादभूमिका में श्री नटवरभाई भट्ट मेरे लिए दिन-प्रतिदिन सम्माननीय व्यक्ति बनते गये ।

उनके द्वारा संकलित तीन पुस्तकें प्रकाशित हुईं । इनमें से करीब दस साल के अथक प्रयास के बाद संकलित हुआ 730 पृष्ठों वाला पुस्तक 'गुलिस्तान-ए-शायरी' शिरमौर है । इस पुस्तक का प्रकाशन कर उन्होंने साहित्यविश्व की उत्तम और अमूल्य सेवा की है । इस पुस्तक की सराहना करते हुए मैं आनंद की अनुभूति कर रहा हूँ और अपने आपको गौरवान्वित भी महसूस कर रहा हूँ ।

उनकी इस कृति के संदर्भ में मेरे मन में सहज ही एक विचार आया कि इसके प्रचार-प्रसार हेतु एक कार्यक्रम हमारी संस्था 'जनजागृति अभियान, वडोदरा' द्वारा आयोजित करना चाहिए । इस विचार को मूर्तिमंत करने हेतु एक कार्यक्रम दिनांक 23 फरवरी 2021 की रात नौ बजे 'मेघाणी वंदना' के फैसबुक पैज पर डॉ. रशीद मीर एवं डॉ. सतीन देसाई 'परवेझ' द्वारा उनको काव्यांजलि देते हुए कार्यक्रम प्रसारित करना था । विधि की वक्रता तो यह थी कि उसी दिन प्रात: छह बजे उनके पुत्र श्री राजीवभाई का मुझे फोन यह दु:खद समाचार देने के लिए आया कि उनके पिताजी श्री नटवरभाई भट्ट सुबह तीन बजे अनंत की यात्रा के लिए चल पड़े थे । मैं हतप्रभ हो गया लेकिन कुछ समय बाद अपने आपको संभालते हुए मैंने सोचा कि 'शो मस्ट गो ओन' और उनकी अनंत की यात्रा सफल रहे इस विचार से हमने उपरोक्त कार्यक्रम प्रसारित किया । शेर शायरी के चाहकों को उनके पूरे जीवन एवं कवन का परिचय हो इस हेतु से गुजराती भाषा का सामयिक 'धबक' का एक विशेष स्मृति अंक भी 'जनजागृति अभियान, वडोदरा' द्वारा प्रकाशित किया गया ।

कोई भी कवि लेखक कभी मरता नहीं है; वह तो अपनी साहित्यिक कृतियों से अमर हो जाता है । इसी तरह श्री नटवरभाई भट्ट भी शायरी और साहित्य प्रेमियों के लिए अमर है, यह नाम अमिट है । श्री नटवरभाई भट्ट इस संकलित कृति 'गुलिस्तान-ए-शायरी' हमें भेंट देकर अमर हो गये है ।